Nai Dunia (Indore), 20th March 2022, Page – 02

रविवार विशेष

बोआई से पहले अब कुछ ही क्षण में पता चलेगी बीज की गुणवत्ता

आइआइटी इंदौर व आईईटी के विज्ञानियों का शोध, लेजर बीम से मिलेगी जानकारी

गजेंद्र विश्वकर्मा • इंदौर

कृषि क्षेत्र में किसानों के साथ प्रायः यह समस्या बनी रहती है कि बीजों की गुणवत्ता कैसी है। यदि बीज खराब निकल जाते हैं तो उत्पादन कम होता है। किसानों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इस समस्या को दूर करने के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) इंदौर और देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट आफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलाजी (आइईटी) ने शोध किया है। इससे फसलों का उत्पादन बढ़ेगा और बीजों में होने वाली मिलावट पर रोक लगाई जा सकेगी। लेजर बीम और साफ्टवेयर की मदद से यह सब कुछ ही क्षण में हो सकेगा।

इस तकनीक से पता लगाई जाती है बीजों की गुणवत्ता

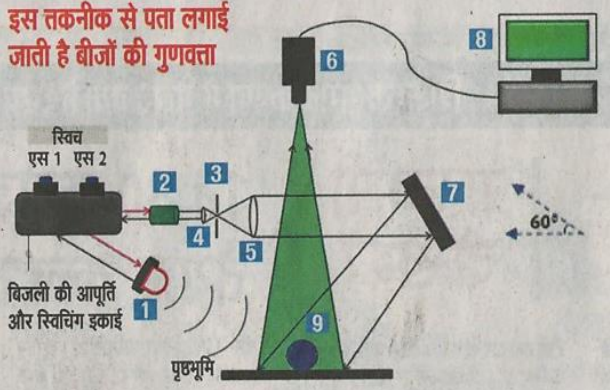

प्रो. शशि प्रकाश, आइईटी

प्रो. विमल भाटिया, आइआइटी

हर गांव में केंद्र बनाने की योजना

शोध करने वाले प्रो. शशि प्रकाश और प्रो. विमल भाटिया का कहना है कि देश के हर गांव में इस तकनीक का केंद्र स्थापित करने से किसानों को लाभ होगा। इसके लिए भारत सरकार और अन्य संस्थानों से बात की जा रही है।

बीज ही खेती का आधार हैं। बीज की अंकुरण क्षमता जांचने के लिए पुराना तरीका यह है कि खेत में बोने से पहले इसके कुछ दाने एक गमले में बोकर देख लें। इसी क्रम में आइआइटी इंदौर का लेजर से बीज की अंकुरण क्षमता जांचने का जो प्रयोग है, उससे किसानों को लाभ मिलेगा।

प्रो. इंदु स्वरूप, प्रधान विज्ञानी, शासकीय कृषि महाविद्यालय, इंदौर

लाभ कमाने के लिए कई बार कुछ बीज कंपनियां और व्यापारी किसानों को गलत बीज दे देते हैं। कुछ व्यापारी तो मंडी से किसानों का माल खरीदकर उसे पैक करके बीज के रूप में बेच देते हैं। यदि बीज की अंकुरण क्षमता पहले ही पता चल जाए तो किसान के लिए लाभदायक है।

आनंदसिंह ठाकुर, जैविक कृषि प्रमुख, भारतीय किसान संघ, मालवा प्रांत

अन्य बीजों पर भी होगा उपयोग

आइआइटी इंदौर के प्रो. विमल भाटिया और आइइटी के प्रो. शशि प्रकाश ने मिलकर शोध को पूर्ण किया। इसे हाल ही में पेटेंट मिला है। शोध में पहले बीजों के अंदर की जैविक गतिविधियां और नमी का डाटा साफ्टवेयर में डाला गया। मशीन में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और मशीन लर्निंग तकनीक को डाटा से जोड़ा गया। लेजर बीम से बीज में रोशनी छोड़ी गई और टकराकर आने वाले प्रकाश के अध्ययन से पता लगाया गया कि बीज की गुणवत्ता क्या है। इसके लिए सोयाबीन के बीज पर प्रयोग किया गया। दोनों विज्ञानियों का कहना है कि अन्य बीजों पर भी इसका उपयोग किया जा सकता है। शोध में सोयाबीन अनुसंधान केंद्र और शोधार्थी पुनीत सिंह ठाकुर व अमित चटर्जी ने भी सहयोग किया।

इस खबर को विस्तार से पढ़ने के लिए स्कैन करें